पंचम अध्याय

"हास्य-व्यंग्य एकांकियों के क्षेत्र में शंकर पुणतांबेकर का योगदान"

पंचम अध्याय

''हास्य-व्यंग्य एकांकियों के क्षेत्र में शंकर पुणतांबेकर का योगदान''

- ❑ प्रास्ताविक

5.1 हिंदी एकांकी साहित्य और एकांकीकार

5.1.1 रामकुमार वर्मा

5.1.2 मोहन राकेश

5.1.3 उपेंद्रनाथ 'अश्क'

5.2 कथा-साहित्य पर आधारित एकांकी लेखन

5.2.1 हरिशंकर परसाई

5.2.2 श्रीलाल शुक्ल

5.2.3 गिरीश रास्तोगी

5.3 हास्य-व्यंग्य एकांकीकार शंकर पुणतांबेकर

- ❑ निष्कर्ष

पंचम अध्याय

''हास्य-व्यंग्य एकांकियों के क्षेत्र में शंकर पुणतांबेकर का योगदान''

❑ प्रास्ताविक -

हिंदी साहित्य किसी एक साहित्यकार की देन नहीं है। उसके निर्माण के पीछे अनेक साहित्यकारों का योगदान है। अपनी रचनाओं से साहित्यकारों ने हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाया है। हिंदी एकांकी साहित्य भी इसके लिए अपवाद नहीं है। अनेक साहित्यकारों ने एकांकी साहित्य लिखकर, उसमें आधुनिक तंत्र का उपयोग कर उसे उत्कृष्ट बनाने का प्रयास किया है। एकांकी में हास्य-व्यंग्य के प्रयोग से समाज को विसंगतियों से परिचित किया जा सकता है। विषय को समाज तक पहुँचाना हो तो हास्य-व्यंग्य एकांकी एक सफल माध्यम है। कतिपय साहित्यकारों ने अपने साहित्य में हास्य-व्यंग्य का प्रयोग कर समाज को सचेत करने का प्रयास किया है। लेकिन हास्य-व्यंग्य का और खास कर व्यंग्य का प्रयोग एकांकी विधा की अपेक्षा उपन्यास, कहानी, निबंध आदि विधाओं में अधिक मात्रा में दिखाई देता है। जब कि उपन्यास, कहानी, निबंध से भी एकांकी अधिक प्रभावी सिद्ध होता है। उपन्यास आदि को एक समय एक ही व्यक्ति पढ़ता है और उस एक ही व्यक्ति पर उस साहित्य मे निहित हास्य-व्यंग्य का प्रभाव पड़ता है परंतु एकांकी का मंचन किया जाता है तब वह एक ही समय बहुत से लोगों को हास्य-व्यंग्य से प्रभावित करने में सफल रहता हैं। हिंदी एकांकी साहित्य में जिन्होंने योगदान दिया हैं, उनमें से प्रतिनिधी एकांकीकारों के योगदान तथा शंकर पुणतांबेकर के योगदान को यहाँ स्पष्ट किया गया है।

'योगदान' शब्द का अर्थ है - सहयोग देना, हाथ बटाना। 'नालंदा विशाल शब्द सागर' में 'योगदान' शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा गया है - ''योगदान (संज्ञा पु.) (सं.) किसी कार्य में साथ देना अथवा सहायक होना।''[1] 'अभिनव शब्दकोश' में इसका अर्थ ''सहयोग''[2] दिया गया है।

---

1. सं. नवल जी - नालंदा विशाल शब्द सागर, पृष्ठ - 1144
2. सं. श्रीपाद जोशी - अभिनव शब्दकोश, पृष्ठ - 206

5.1 हिंदी एकांकी साहित्य और एकांकीकार -

हिंदी एकांकी साहित्यकारों में से हिंदी एकांकी साहित्य को समृद्ध करनेवाले रामकुमार वर्मा, उपेंद्रनाथ 'अश्क', मोहन राकेश, उदयशंकर भट्ट, गोविंददास, भुवनेश्वर, हरिशंकर शर्मा, शंकर पुणतांबेकर आदि का उल्लेख कर सकते हैं। पुणतांबेकर के समकालीन एकांकीकार रामकुमार वर्मा, मोहन राकेश, उपेंद्रनाथ 'अश्क' आदि के प्रत्यक्ष योगदान तथा हरिशंकर परसाई, श्रीलाल शुक्ल और गिरीश रास्तोगी ('राग दरबारी' उपन्यास का नाट्यावलोकन करनेवाले) आदि के अप्रत्यक्ष योगदान को देखते हुए यहाँ शंकर पुणतांबेकर के हिंदी हास्य-व्यंग्य एकांकियों के क्षेत्र में योगदान को स्पष्ट करना उचित होगा। आगे हिंदी व्यंग्य एकांकी के प्रमुख एकांकीकारों का परिचय दिया जा रहा है।

5.1.1 रामकुमार वर्मा :

आधुनिक एकांकी के जन्मदाता के रूप में रामकुमार वर्मा का कार्य महत्त्वपूर्ण है। इनके एकांकियों से इनके पाश्चात्य तंत्र तथा विचारधारा के अध्ययन का तथा उनकी प्रतिभा का परिचय मिलता है। इन्होंने ऐतिहासिक तथा सामाजिक एकांकी लिखे हैं। रामकुमार वर्मा का एकांकी 'बादल की मृत्यू' (1930) हिंदी का पहला एकांकी माना जाता हैं। भारतेंदू नाटक और एकांकी को एक मानते थे, इस दृष्टि से उनके 'वैदिक हिंसा हिंसा न भवति' को पहला एकांकी माना जा सकता है। लेकिन एकांकी को उसके तत्त्वों के आधार पर नाटक से स्वतंत्र रूप में देखे तो रामकुमार वर्मा का 'बादल की मृत्यू' एकांकी हिंदी का पहला एकांकी है। इस एकांकी के बाद उनके अनेक एकांकी संग्रह प्रकाशित हुए। पृथ्वीराज की आँखे, चारुमित्रा, रेशमी टाई, विभूति, सप्त किरण, रूपरंग कौमदी, महोत्सव, ऋतुराज, रजत रश्मि, दीपदान, कामकन्दला, बापू, इंद्रधनुष और रिमझिम, पांच जन्म, मयूरपंख, जूही के फूल आदि उनके कुछ उल्लेखनीय एकांकी संग्रह हैं।

रामकुमार वर्मा यथार्थवाद को एकांकी के लिए आवश्यक समझते हैं। साथ ही एकांकी में मनोवैज्ञानिक पक्ष को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इनके एकांकी के पात्र आदर्शवादी दिखाई देते हैं। आदर्शवाद के प्रभाव के कारण कहीं-कहीं एकांकी यथार्थ से दूर जाते दिखाई

देते हैं। 'रेशमी टाई' एकांकी की 'ललिता', '18 जुलाई की शाम' एकांकी की 'उषा' और 'एक्ट्रेस' की 'प्रभातकुमारी' कुछ ऐसे ही आदर्शवादी पात्र हैं जो अंतत: अपने पति के सम्मान की रक्षा करते दिखाई देते हैं। समस्यामूलक एकांकियों में रामकुमार वर्मा ने शिक्षित मध्यवर्गीय दाम्पतियों की अनेक समस्याओं - प्रेम, सैक्स, संदेह, दंभ आदि को केंद्र में रखा है। इनके एकांकी रंगमंच की दृष्टि से सफल बने हैं। यह एकांकी सहज रूप से मंच पर खेले जा सकते हैं। इन्होंने अपने एकांकियों में जिस आदर्शवाद की स्थापना की है वह समाज के लिए कल्याणकारी है। गोविंददास इनके एकांकियों के विषय में लिखते हैं - ''आपने ऐसे आदर्शवाद की प्रतिष्ठा की है, जो जीवन की व्यावहारिकता है।''[1] अत: कहना उचित होगा कि रामकुमार वर्मा ने अपने एकांकियों के माध्यम से आदर्शवाद को भी समाज के सामने प्रस्तुत किया है। एकांकी के तत्त्व की दृष्टि से भी इनके एकांकी उल्लेखनीय हैं। आरंभ, संकलन-त्रय, चरम सीमा आदि तत्त्वों को उनके एकांकी में सूक्ष्मता से अंकित किया गया है। इनकी 'रूप की बीमारी' नामक एकांकी भी एक हास्यपूर्ण एकांकी है। इस एकांकी के पूर्व इन्होंने सभी पात्रों का ब्यौरेवार चित्रण किया है, जिससे पाठक हर पात्र से एकांकी के अंत तक जुड़ा रहता है। इन्होंने एकांकी कला को उत्कृष्ट बनाने का सफल प्रयास किया है।

स्पष्ट है कि रामकुमार वर्मा का एकांकी साहित्य हिंदी साहित्य के लिए अमूल्य नीधि है। इन्होंने एकांकी कला को विकसित करने में, उसे सँवारने में अपना विशेष योगदान दिया है किंतु हास्य-व्यंग्य एकांकी लेखन में उनकी विशेष प्रवृत्ति नहीं रही है।

5.1.2 मोहन राकेश :

मोहन राकेश ने अपने एकांकियों में आधुनिक परिवेश में परिवारों में बढ़ती मानसिक घूटन का अंकन किया है। इन्होंने अधिकतर समस्या-प्रधान नाटक और एकांकियों की रचना की है। इनके एकांकी मनोवैज्ञानिक ढ़ंग के, खंडित होते मानवीय मूल्यों को चित्रित करनेवाले, धार्मिक मान्यताओं की टूटन को उजागर करनेवाले हैं। मोहन राकेश ने ऐसे विषयों को एकांकियों का आधार बनाया है जो उलझन रहित होकर भी गंभीर हैं और सामान्य पाठक की पहुँच से बाहर हैं। अत: उनकी एकांकियों को समझने के लिए पाठक तेज दिमाग़ होना

---

1. सं. गोविंददास - श्रेष्ठ हिंदी एकांकी, पृष्ठ - 1

चाहिए। द्विजराम यादव इनके विषय में लिखते हैं - ''मोहन राकेश के नाटकों और एकांकी नाटकों के प्रतिपाद्य को समझने के लिए प्रबुद्ध-वर्ग की आवश्यकता है। उन्होंने समाज और परिवार की ढहती हुई मान्यताओं एवं परंपराओं को बड़ी बारीकी के साथ हमारे सामने प्रस्तुत किया है।''[1] मोहन राकेश द्वारा लिखित अधिकतर नाटक तथा एकांकी मानसिक उद्वेग, आधुनिकता के युग में परिवारों में बढ़ते तनाव आदि का चित्रण करते हैं। उनका 'लहरों के राजहंस' और 'आधे-अधूरे' कुछ इसी प्रकार के नाटक हैं। 'रात बीतने तक' एकांकी में बाद में प्रकाशित 'लहरों के राजहंस' नाटक की पूर्व झलक दिखाई देती है। इस एकांकी की 'सुंदरी' भी मानसिक उलझनों से घिरि हुई है। सुंदरी तथा नंद के मन का द्वंद्व इसमें चित्रित हुआ है। गौतम बुद्ध से मिलने के बाद नंद के विलासी स्वभाव में अमूलाग्र बदलाव आ जाता है। गौतम बुद्ध से प्रभावित नंद सुंदरी के सामने भिक्षुक के रूप में आता है। वह सुंदरी से कहता है - ''तुम बहुत कुछ दे सकती हो, सुंदरी। तुम्हें अपने रूप पर गर्व है न ! आज वह गर्व इस भिक्षापात्र में डाल दो। तुम्हें अपनी सुखकामना ही सब से बड़ी कामना प्रतीत होती है न ? आज उस कामना को भी भिक्षा में दे डालो। रात बीत चुकी है, सुंदरी ! मैंने अपने अंतर का अंधकार गौतम बुद्ध के भिक्षापात्र में डाल दिया है। तुम अपने अंतर का अंधकार मेरे भिक्षापात्र में डाल दो।''[2] नंद के इस कथन से उसमें आया परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। जीवन के झूठे मोहजालों से मुक्त होकर वह सुंदरी को भी बुद्ध की शरण में आने के लिए प्रेरित करना चाहता है। इस प्रकार से मोहन राकेश ने प्रस्तुत एकांकी में सुंदरी और नंद के मानसिक द्वंद्व को चित्रित किया है। ऐतिहासिक परिवेश में लिखा गया यह नाटक सर्वथा आधुनिक है। आधुनिक युग में बढ़ते चले जा रहे संघर्षपूर्ण स्थिति का चित्रण करना ही प्रस्तुत एकांकी का प्रमुख उद्देश्य है। इस एकांकी में पात्रों के मन की विकल अवस्था आधुनिक जीवन-मूल्यों का उद्घाटन करती है।

मोहन राकेश के एकांकी संग्रह 'अंडे के छिलके अन्य एकांकी तथा बीज नाटक' की एकांकियाँ भी आधुनिक युग के टूटते सामाजिक मूल्यों को चित्रित करते हैं। 'अंडे के छिलके' एकांकी में पाखंडपूर्ण और अर्थहीन जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है। अंडे का छिलका यहाँ प्रतीक रूप में दिखाई देता है। अंडे का मूलतत्त्व पेट में चला गया है और

---

1. द्विजराम यादव - मोहन राकेश के नाटक, पृष्ठ - 167
2. मोहन राकेश - रात बीतने तक तथा अन्य ध्वनि नाटक, पृष्ठ - 22

छिलका बाकी सह गया है। यहाँ पवित्रता की सीमा रेखा खंडित हो चूकी है। मान्यताओं का खंडन करने पर भी उनकी रक्षा करने का झूठा एवं आडंबरपूर्ण प्रयास चलता रहता है। प्रस्तुत एकांकी में भी सभी पात्र एक-दूसरे से छुपकर अंडे खाते हैं और चाहते हैं कि यह राज किसी दूसरे पर जाहिर ना हो। दूसरों के सामने वह इसका नाम लेना भी पाप समझते हैं। 'श्याम' बरसात के दिनों में केवल चाय पीने के बदले उसके साथ अंडे भी खाना चाहता हैं लेकिन 'अंडे' शब्द का उच्चार भी नहीं करना चाहता। भाभी (वीना) द्वारा 'अंडे' शब्द सुनने पर श्याम उस से कहता है - ''संयम, संयम संयम ! जरा संयम से काम लो, भाभी ! चार दिन जो अंडे खा लिए हैं वे छिलकों समेत वसूल हो जायेंगे। अम्मा के कान में भनक भी पड़ गई तो सारे घर का गंगा-इश्नान हो जायेगा और तुम देख ही रही हो कि बादलों का दिन है। किसी को कुछ हो - हवा गया तो ...।''[1] इस प्रकार झूठे तथा आडंबरपूर्ण व्यवहार का यह एकांकी पर्दाफाश करता है। इस एकांकी के द्वारा मोहन राकेश टूटते सामाजिक मूल्यों पर करारा व्यंग्य करते हैं। 'प्यालियाँ टूटती हैं' एकांकी भी पारिवारिक संबंधों के टूटन के प्रतीक रूप में आया है। इस एकांकी में अपने-आप को आधुनिक तथा नए विचारों का दिखाने की कोशिश करनेवाली माधुरी और मीरा को अपने जीजाजी का पुराना ढ़ंग पसंद नहीं है। घर पर मिस्टर और मिसेज मेहता की पार्टी के मौके पर बेवक्त घर पर आए जीजाजी को देख कर दोनों उलझन में पड़ जाती हैं कि 'अब क्या करें ?' दोनों जीजाजी को घर के दूसरे दरवाजे से बाहर निकाल देती है। अपनी झूठी आधुनिकता का भाँडा कहीं फूट ना जाए इस डर से दोनों अपने जीजाजी को तक घर से बाहर निकालने पर उतारू होती हैं। इस एकांकी में पारिवारिक संबंधों के खंडन का सफल चित्रण हुआ है।

इस तरह स्पष्ट है कि मोहन राकेश के नाटक और एकांकी भी अधिकतर समस्याओं से घिरे, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक विघटन, सामाजिक त्रासदी का चित्रण करनेवाले हैं। इन उपर्युक्त एकांकियों की तरह ही उनके अन्य नाटक और एकांकी भी आधुनिक युग में उत्पन्न समस्याएँ और मानसिक द्वंद्व को वाणी देते हैं। इनकी रचनाओं का मूल स्वर संघर्ष है। इनके पात्रों में मानसिक संघर्ष दिखाई देता हैं। फिर चाहे वह 'आधे-अधूरे' की सावित्री हो, 'लहरों के राजहंस' तथा 'रात बीतने तक' की सुंदरी और नंद हो, 'प्यालियाँ टूटती हैं' की

---

1. मोहन राकेश - अंडे के छिलके अन्य एकांकी तथा बीज नाटक, पृष्ठ - 11

माधुरी हो सभी एक मानसिक द्वंद्व के शिकार है। मोहन राकेश ने इस दयनीय वास्तविकता को, नजरअंदाज की गई बातों को अपने नाटक तथा एकांकियों का विषय बनाया है। इन समस्त प्रश्नों को उन्होंने पाठक वर्ग के सम्मुख रख दिया है। इन्होंने हिंदी एकांकी साहित्य को समृद्ध बनाने में अपना सफल योगदान दिया है। अत: कह सकते हैं कि मोहन राकेश के एकांकियों में व्यंग्य जरूर मिलता है किंतु हास्य-व्यंग्य का अभाव है।

5.1.3 उपेंद्रनाथ 'अश्क' :

हिंदी एकांकिकारों में उपेंद्रनाथ 'अश्क' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके नाटकों, एकांकियों मे अधिकांश त्रासदी दिखाई देती है। इसमें नारी का पीड़ित, शोषित रूप दिया गया है और उसके जीवन का दर्द भरा चित्रण किया है। मानसिक द्वंद्व का मनोवैज्ञानिक रूप से विवेचन करना इनके एकांकियों का मुख्य गुण है। रामकुमार वर्मा की तरह इन्होंने भी हिंदी एकांकी को पाश्चात्य रंगमंच तथा पाश्चात्य टेकनीक से समृद्ध बनाया है। केवल इतना ही नहीं तो उन्होंने आधुनिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक समस्याओं को एकांकियों में उद्घाटित कर एकांकी को आधुनिक नाटक का एक महत्त्वपूर्ण अंग बनाया है। इनके एकांकियों में कृत्रिमता नहीं दिखाई देती है। इन्होंने अपने जर्जर भारतीय समाज का सजीव चित्रण किया है। समाज के द्वारा निर्माण समस्याओं का सामना करनेवाले हताश भारतीय मध्यवर्ग के क्रंदन, प्रेम, घृणा, आनंद, संयोग, वियोग के विविध चित्र अंकित किए हैं। इनके 'देवताओं की छाया में', 'तूफान से पहले', 'पर्दा उठाओ', 'कैद और उड़ान', 'साहब को जुकाम है' आदी एकांकी संग्रह उल्लेखनीय है। चरवाहे, खिड़की, चिलमन, देवताओं की छाया में, अंधी गली, मेंमना, चमत्कार आदि इनके कुछ प्रसिद्ध एकांकी है। उनके लक्ष्मी का स्वागत, सूखी डाली आदि पारिवारिक जीवन से संबंधित एकांकी है। नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के संघर्ष का चित्रण 'सूखी डाली' इस एकांकी में किया गया है। दादाजी जो पुरानी पीढ़ी का नेतृत्व करते हैं, फिर भी अपने घर को बिखरने से बचाने के लिए वह अपनी पतोहू (बेला) के इच्छानुसार चलने का आदेश कर के बाकी लोगों को देते है। इंदु तथा अन्य सदस्यों को बुलाकर दादाजी कहते हैं - ''बेटा यह कुटुंब एक महान वृक्ष है। हम सब इसकी डालियाँ हैं। डालियों ही से पेड़-पेड़ है और

डालियाँ छोटी हों चाहे बड़ी सब उसकी छाया को बढ़ती हैं। मैं नहीं चाहता, कोई डाली टूट कर पृथक् हो जाए। तुम सदैव मेरा कहा मानते रहे हो। बस यही बात मैं कहना चाहता हूँ... यदि मैंने सुन लिया - किसी ने छोटी बहू का निरादर किया हैं; उसकी हँसी उड़ाई है या उसका समय नष्ट किया है तो इस घर से मेरा नाता सदा के लिए टूट जाएगा ··· अब तुम सब जा सकते हों।''[1] इस प्रकार से उपेंद्रनाथ 'अश्क' ने अपनी एकांकियों में पारिवारिक समस्याओं, वैचारिक मतभेद आदि बातों को भी चित्रित किया है।

उपेंद्रनाथ 'अश्क' का 'तौलिए' एकांकी भी हास्य-व्यंग्य से युक्त है। वास्तव में इस एकांकी में उपेंद्रनाथ ने आदत से मजबूर मधू के स्वभाव के चित्रण द्वारा जीवन में बढ़ती कृत्रिमता पर व्यंग्य किया है। मधू बचपन से ही ज्यादा साफ-सुथरे माहौल में रह चुकी है। वह सफाई को लेकर कुछ ज्यादा ही सतर्क दिखाई देती है। मधु अपने पति वसंत द्वारा गलत तौलिए का उपयोग किए जाने के कारण उस पर नाराज होती है और दोनों मे थोड़ी-सी अनबन हो जाती है। मधु के इस स्वभाव पर वसंत व्यंग्य करता हुआ कहता हैं - ''मुझे गंदगी से घृणा नहीं, किंतु मैं गंदगी पसंद नहीं करता - बड़ा नाजुक-सा फ़र्क है। यदि हमें जीवन का सामना करना है तो रोज गंदगी से दो-चार होना पड़ेगा, फिर इससे घृणा कैसी? जिन गरीबों को तुम अपने बरामदे के फर्श पर भी पाँव न रखने दो, मैं उनके पास घंटो बैठ सकता हूँ। (मधू हँसती है) और मैंने ऐसे गंदे इलाकों में जीवन के निरंतर कई वर्ष बिताए हैं, जहाँ तुम्हारी स्वच्छता की सनक तुम्हें गुजरने तक न दे। समझीं!''[2] इस तरह वसंत जीवन का वास्तविक चित्रण मधु के सामने स्पष्ट करता है। वह चाहता है कि, मधु साफ-सफाई का ध्यान रखे लेकिन सफाई को अटल नियम ना बनाए। प्रस्तुत एकांकी में उपेंद्रनाथ 'अश्क' ने सफाई को आवश्यकता से अधिक महत्त्व देने तथा उसके आडंबर पर व्यंग्य किया है।

उपेंद्रनाथ 'अश्क' ने इस तरह से पारिवारिक, मध्यवर्गीय समाज, नारी का जीवन आदि पर आधारित एकांकी लिखे हैं। 'अधिकार का रक्षक' उनका व्यंग्य प्रधान एकांकी है। इस एकांकी में उन्होंने आधुनिक नेताओं की प्रवृत्ति का पर्दाफाश किया है। 'जोंक' एकांकी में भी समाज में शोषक के रूप में फैले हुए ऐसे निर्लज्ज लोगों को विषय बनाया गया है जो जोंक

---

1. सं. गोविंददास - श्रेष्ठ हिंदी एकांकी, पृष्ठ - 80
2. सं. श्रीकृष्ण-अरूण मनमोहन सरल - प्रतिनिधि हास्य एकांकी, पृष्ठ - 39

की तरह दूसरों का खून चूसते हैं। उपेंद्रनाथ 'अश्क' ने मध्यवर्गीय समाज की रूढ़ियों कमजोरियों एवं समस्याओं को अपने एकांकियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। अत: कहना योग्य होगा कि उपेंद्रनाथ 'अश्क' ने हिंदी एकांकी साहित्य में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

5.2 कथा-साहित्य पर आधारित एकांकी लेखन -

प्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई तथा श्रीलाल शुक्ल का साहित्य महत्त्वपूर्ण है। भले ही इन्होंने एकांकी साहित्य नहीं लिखा है लेकिन इनके निबंध, उपन्यास, कहानी में व्यंग्य का प्रभाव उल्लेखनीय है। हरिशंकर परसाई के 'रानी नागफनी की कहानी' का 'लंगडी टांग' शीर्षक से नाट्यावलोकन किया गया है। श्रीलाल शुक्ल के प्रसिद्ध उपन्यास 'रागदरबारी' का गिरीश रास्तोगी द्वारा 'रंगनाथ की वापसी' नाम से नाट्य-रूपांतर किया गया है। इनका हिंदी एकांकी तथा नाट्य साहित्य में अप्रत्यक्ष योगदान दिखाई देता है।

5.2.1 हरिशंकर परसाई :

हरिशंकर परसाई को आधुनिक व्यंग्य के जन्मदाता के रूप में जाना जाता है। इन्होंने व्यंग्य का प्रयोग समाज प्रबोधन के लिए किया है। व्यक्ति और समाज की विसंगतियों, विद्रुपताओं पर करारी चोट की है। इन्होंने नाटक, एकांकी नहीं लिखे हैं किंतु इनके कहानी संग्रह 'रानी नागफणी की कहानी' का 'लंगडी टांग' नाम से नाट्य-रूपांतर हो चुका है। इसमें हास्य और व्यंग्य उत्कृष्ट रूप से चित्रित हुआ है। राजकुमार 'अस्तभान' और रानी 'नागफणी' के एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होने तथा शादी के लिए किए गए प्रयास के दौरान आए विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से समाज से संबंधित विविध क्षेत्रों में चल रहे घपलों का पर्दाफाश किया गया है। शिक्षा व्यवस्था, कानून व्यवस्था, नियुक्तियों मे राजनीतिक स्थिति, राजनेताओं की आपसी खिंचा-तानी, कुर्सी की लालसा, दहेज आदि बातों पर परसाई ने प्रभावी व्यंग्य किया है। इसके पात्र तथा उनके संवाद कहीं-कही मूर्खता की हद पार कर देते हैं। अस्तभान अपने बी.ए. का रिजल्ट अख़बार में देखता है और वह फेल हुआ है, यह जानकर अपने मित्र मुफतलाल से कहता है - ''किसी अख़बार में हमारा नाम नहीं छपा। ये अख़बारवाले मेरे पीछे पड़े हैं। ये मेरा नाम कभी नहीं छापेंगे। भला यह भी कोई बात है कि जिसका नाम अखबार वाले छापें, वह

पास हो जाए और जिसका न छापें, वह फेल जो जाए। अब तो पास होने के लिए मुझे अपना ही अखबार निकालना पड़ेगा। तुम्हें उसका संपादक बनाऊँगा और तब तुम मेरा नाम पहले दर्जे में छापना।''[1] इस तरह के मूर्खतापूर्ण कथन से हास्य-निर्मिति हुई है। यह एक व्यंग्य-कथा है। इसमें लेखक ने फैंटसी के माध्यम से आज की वास्तविकता के कुछ बिंदूओं पर व्यंग्य किया है। अत: कह सकते हैं कि हरिशंकर परसाई का अप्रत्यक्ष योगदान नाट्य साहित्य को मिला है।

5.2.2 श्रीलाल शुक्ल :

श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखा गया व्यंग्यात्मक उपन्यास 'राग दरबारी' में भारतीय समाज व्यवस्था का समग्र रूप से चित्रण करने का प्रयास किया गया है। यह एक उल्लेखनीय कृति है। इस उपन्यास को 'साहित्य अकादमी' का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। डॉ. गिरीश रास्तोगी द्वारा इस उपन्यास का 'रंगनाथ की वापसी'नाम से नाट्यावलोकन किया गया है।

5.2.3 गिरीश रास्तोगी :

गिरीश रास्तोगी गोरखपुर विश्वविद्यालय में हिंदी का अध्यापन 1954 से करते हैं। 'हिंदी नाटकों में संगीत' इस विषय पर उन्होंने पीएच्.डी. की। उन्होंने स्वयं नाटकों में भूमिकाएँ की है और साथ ही बीस एक नाटकों का निर्देशन भी किया है। उन्होंने इंग्लंड में ब्रिस्टल स्कूल ऑफ ड्रामा में नाट्यशिक्षा प्राप्त की। रंगभूमि-आंदोलन के लिए समर्पित हुए संस्था 'रूपांतर' के द्वारा कार्य कर इन्होंने रंगभूमि को विभिन्न अंगों से विकसित करने का प्रयास किया है। उपरी दिखावे के बदले मुख्यत: अभिनय के माध्यम से आशय व्यक्त हो जाए इस लिए वे प्रयत्नरत रहे हैं।

'रंगनाथ की वापसी' नाटक शुष्क तंत्रव्यवस्था की अपेक्षा समाजिक चेतना पर प्रकाश डालनेवाला नाटक है। इसमें डॉ. गिरीश रास्तोगी ने अपने अध्ययनशीलता का परिचय देते हुए एक उपन्यास को नाटक के रूप में सफलता से परिवर्तित किया है। इसमें उन्होंने संवाद, अभिनय, मंचन की सुविधा तथा प्रकाश योजना आदि का ध्यान रखा है। स्वातंत्र्योत्तर भारत के ग्रामीण जीवन में फैली मूल्यहीनता की परतों को एक-एक कर पाठकों के सामने रख

---

1. हरिशंकर परसाई - रानी नागफणी की कहानी, पृष्ठ - 10

दिया है। यह कथा नगर से कुछ ही दूर बसे हुए 'शिवपालगंज' नामक गाँव की है। यहाँ पर सब चाहते हैं कि गाँव का विकास हो लेकिन इससे भी तीव्र इच्छा रखते हैं कि पहले खुद का विकास हो। अत: प्रगत और विकास के तमाम नारों के बाद भी इस स्वार्थ और अवांछनीय तत्त्वों के सामने सब निरर्थक सिद्ध हो जाता है। शिवपालगंज की पंचायत, कॉलेज की प्रबंध समिती, कोऑपरेटिव्ह सोसाइटी आदि पर अपना अधिकार जमाए बैठे वैद्य जी उसी राजनीतिक संस्कृति का प्रतीक है, जो वर्तमान में हमें चारों ओर से जकड़ रही हैं। इस नाटक के सभी पात्र अपनी-अपनी दुनियाँ सँवारने के चक्कर में लगे हैं। मास्टर मोतीराम कक्षा में पढ़ाने के बदले सारा समय अपनी आटे की चक्की के पास ही काटते हैं। प्रिन्सिपल अपने अधिकार को सँभाले रखने का हरदम प्रयास करता हैं। कुछ प्रसंगों से हास्य की निर्मिति भी हुई है।

स्पष्ट है कि 'राग दरबारी' उपन्यास का 'रंगनाथ की वापसी' नाम से किया गया, नाट्यावलोकन हिंदी साहित्य को हास्य-व्यंग्य रचना की देन हैं। इस रचना का मराठी में भी शरयू आ. पेडणेकर और आ.ना. पेडणेकर द्वारा अनुवाद किया गया है। गिरीश रास्तोगी ने सफलतापूर्वक श्रीलाल शुक्ल द्वारा किए गए व्यंग्य को 'रंगनाथ की वापसी' में उतारा है। इसमें सामाजिक विसंगति, शिक्षा क्षेत्र की अव्यवस्था, संस्थाओं में मची अफरातफरी आदि विभिन्न समस्याओं पर एकत्रित प्रकाश डाला गया है। अत: गिरीश रास्तोगी द्वारा भी नाट्य साहित्य को अप्रत्यक्ष योगदान मिला है।

5.3 हास्य-व्यंग्य एकांकीकार शंकर पुणतांबेकर -

शंकर पुणतांबेकर एक व्यंग्यकार के रूप में प्रसिद्ध है। इन्होंने अपने एकांकी साहित्य में हास्य-व्यंग्य का प्रयोग किया है। इनके 'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' और 'बचाओ, मुझे कवियों से बचाओ' हास्य-व्यंग्य एकांकी संग्रह हैं। इन एकांकियों के विषय में द्वितीय तथा तृतीय अध्यायों में चर्चा की जा चुकी हैं। 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ'की सभी एकांकियाँ मंचन की दृष्टि से सफल सिद्ध हो सकती हैं। अत: इन एकांकियों के लेखन का उद्देश्य सही अर्थों में सफल कहा जा सकता है। इन एकांकियों मे निहित हास्य-व्यंग्य समाज की विद्रुपताओं, मूर्खताओं, समस्याओं पर आधारित है। इन हास्य-व्यंग्य एकांकी संग्रह से भी

पुणतांबेकर की अन्य साहित्य विधाएँ अधिक प्रभावी है। दोनों एकांकी संग्रह के सभी एकांकी विभिन्न विषयों को उजागर करते हैं। इसमें शिक्षा व्यवस्था, स्वास्थ्य विभाग, राजनीतिक व्यवस्था आदि विभिन्न विषयों पर हास्य-व्यंग्य किया है। 'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' एकांकी में डॉक्टरी पेशे में मरिजों द्वारा पैसा जमा करने की डॉक्टरों की वृत्ति के प्रति समाज को जागृत किया गया है। 'तितली' एकांकी में भी अतिआधुनिकता को अनावश्यक महत्त्व देने की वृत्ति को उजागर किया है। इसमें पुणतांबेकर ने 'रतना' जैसी आधुनिकता की शिकार महिलाओं को जीवन के यथार्थ से परिचित कराया है। 'इन्टरव्यू : एक चुनाव के उम्मीदवाद से' एकांकी भी सामाजिक चेतना जगाने का काम करती है। इस एकांकी के द्वारा शंकर पुणतांबेकर ने चुनाव के लिए वोट देते समय पहले उस उम्मीदवार की योग्यता को परखने का सुझाव दिया है। 'इन्टरव्यू की तैयारी' एकांकी में भी शिक्षा व्यवस्था की त्रासदी को स्पष्ट किया है। अन्य एकांकी भी अलग-अलग विषयों को उद्घाटित करते हैं। पारिवारिक जीवन में उत्पन्न छोटी-मोटी बातों को भी पुणतांबेकर ने एकांकी का विषय बनाया है। यह सभी एकांकी समाज को जागरूक करने का कार्य करते हैं।

अत: कह सकते हैं कि पुणतांबेकर ने अपने एकांकी साहित्य द्वारा हास्य-व्यंग्य एकांकी क्षेत्र का मार्ग प्रशस्त किया है। डॉ. सुरेश माहेश्वरी ने इनके विषय में लिखा है - "पुणतांबेकर जी हिंदी के लब्ध प्रतिष्ठित व्यंग्यकार है। उन्होंने अपनी प्रारंभिक रचनाओं में हास्य की मदद भी ली है। समाज की विसंगतियों, विद्रुपताओं पर विदग्ध शैली में मारक और प्रहारक सृजन साहित्य की सभी विधाओं को शैली रूप में ग्रहण कर हास्य-व्यंग्य का सृजन किया है। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल, लतीफ घोंघी के बाद पुणतांबेकर जी का नाम आता है। ये व्यंग्य के पांडव हैं।"[1] इस से शंकर पुणतांबेकर के व्यंग्य की प्रखरता स्पष्ट होती है। इन्होंने समकालीन एकांकिकारों की तरह समस्याओं का केवल चित्रण न कर उसे हास्य-व्यंग्य शैली मे प्रस्तुत किया है। गंभीरता तथा जटिलता के बदले हास्य-व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग करते हुए सरलता से विषय की प्रस्तुति की है। इन्होंने हिंदी हास्य-व्यंग्य एकांकी साहित्य में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

---

1. परिशिष्ट - 3 से उद्धृत

निष्कर्ष -

शंकर पुणतांबेकर ने अपने एकांकी साहित्य के माध्यम से समाज, राजकीय पक्ष, शैक्षिक अव्यवस्था पर व्यंग्य किया है। व्यंग्य के प्रयोग से उन्होंने अव्यवस्था को सुव्यवस्था की ओर, अनाचार को सदाचार की ओर तथा अनीति को नीति की ओर ले जाने का प्रयास किया है। उनकी इस शुरुआत में प्रथम आता हैं, 'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' एकांकी संग्रह। यह हास्य-व्यंग्य रचना है जो हँसते-हँसाते समाज की असंगत बातों को उजागर करती है।

शंकर पुणतांबेकर के समकालीन एकांकीकारों ने ज्यादा तौर पर समाज सुधार, नैतिकता, उपदेशात्मकता आदि बातों को एकांकी का विषय बनाया है। समाज में फैल रहे अनाचार, अनैतिकता पर एकांकीकारों ने अपने एकांकियों के माध्यम से आवाज उठाई है। जातियता, सांप्रदायिक भावना सामाजिक तथा वैयक्तिक समस्याओं को कुछ एकांकीकारों ने उजागर किया है तो कहीं पर राजनीतिक नेताओं, सत्ताधारी लोग, धर्म के ठेकेदारों जैसे शोषक वर्ग पर व्यंग्य भी किया गया है।

अत: शंकर पुणतांबेकर के समकालीन एकांकीकार तथा व्यंग्यकारों के एकांकी और नाटक साहित्य को देखकर यह स्पष्ट होता है कि समकालीन एकांकिकारों ने तत्कालीन समाज का चित्रण अपने एकांकियों में किया है। वे अपने समाज की समस्याओं, विसंगतियों आदि से भलि-भाँति परिचित थे। रामकुमार वर्मा ने आधुनिक एकांकी को श्रेष्ठतम बनाने का सफल प्रयास किया हैं। इन्होंने यथार्थवाद को एकांकी में आवश्यक समझा है। एकांकी में मनोवैज्ञानिक पक्ष को वे महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इनके एकांकियों में आदर्शवादी पात्र दिखाई देते हैं।

मोहन राकेश के एकांकी, नाटक मनोवैज्ञानिक हैं। इसमें पात्रों का मानसिक उद्वेग, द्वंद्व स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इनके एकांकी समस्या प्रधान है। आधुनिक जीवन में बढ़ती जटिलता को इन्होंने अपने साहित्य में अभिव्यक्ति दी है। इनके बहुत से एकांकी, नाटक रेडिओ आदि पर खेले जा चुके है।

उपेंद्रनाथ 'अश्क' ने भी अपनी एकांकियों में नई-पुरानी पीढ़ी का संघर्ष, पारिवारिक समस्या, मध्यवर्गीय समाज जीवन, स्त्री-जीवन की समस्याएँ आदि विविध विषयों को अपने एकांकियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। समाज के शोषक वर्ग पर भी 'जोंक' जैसे एकांकियों के माध्यम से व्यंग्य किया है।

स्पष्ट है कि रामकुमार वर्मा, मोहन राकेश, उपेंद्रनाथ 'अश्क' जैसे एकांकीकारों ने हिंदी व्यंग्य एकांकी में प्रत्यक्ष योगदान दिया है। हरिशंकर परसाई तथा श्रीलाल शुक्ल दोनों श्रेष्ठ व्यंग्यकार के रूप में जाने जाते हैं लेकिन उन्होंने एकांकी साहित्य नहीं लिखा है। हरिशंकर परसाई के 'रानी नागफणी की कहानी' और श्रीलाल शुक्ल के 'राग दरबारी'का किया गया नाट्य-रूपांतर उल्लेखनीय है। नाट्यरूपांतर करने जैसे उत्कृष्ट साहित्य की रचना कर इन दोनों ने भी अपना अप्रत्यक्ष रूप से परंतु महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। गिरीश रास्तोगी ने भी 'राग दरबारी' उपन्यास का नाट्य-रूपांतर कर अपना योगदान दिया है।

उपर्युक्त सभी रचनाकारों ने हिंदी हास्य-व्यंग्य एकांकी साहित्य को समृद्ध बनाने में अपना योगदान दिया है। रामकुमार वर्मा, मोहन राकेश, उपेंद्रनाथ अश्क आदि ने समस्याप्रधान एकांकियों की रचना की है जिसमें व्यंग्य की झलक दिखाई देती है। हरिशंकर परसाई, श्रीलाल शुक्ल, गिरीश रास्तोगी ने अपना अप्रत्यक्ष योगदान दिया है। इन सभी के एकांकी, नाटक की गंभीर वातावरण में निर्मिति हुई है। शंकर पुणतांबेकर ने गंभीर विषयों को तथा समस्याओं को हास्य-व्यंग्य मिश्रित वातावरण में सरलता से पाठकों तक पहुँचाया है। मंचन के योग्य तथा हास्य-व्यंग्य के द्वारा लोगों को समस्या पर विचार करने को प्रवृत्त करनेवाले एकांकी संग्रह की रचना कर इन्होंने हिंदी हास्य-व्यंग्य एकांकी में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। स्नेह-संमेलन, कॉलेज आदि में इनके एकांकी खेले जा सकते हैं। अत: हिंदी हास्य-व्यंग्य एकांकियों में शंकर पुणतांबेकर का योगदान उल्लेखनीय है।

❑❑❑❑